ISSN – 2347-7075
Impact Factor– 8.141

International Journal of Advance and Applied Research

Special Issue On

"Relevance of Swami Dayanand Saraswati & Indian Nationalism"

January- February 2025
Volume-6 Issue-7

Executive Editors

Dr. Priti D. Pohekar
Dr. T. B. Puri

Sr. No.	Name of Author	Title of Paper	Page No.
76	प्रा. बनसोडे राजेंद्र बंकटी	स्वामी दयानंद सरस्वती यांची धार्मिक विचार	319 - 32
77	प्रा. किशोर नारायण काळुशे	स्वामी दयानंद सरस्वती धर्मसुधारक आणि समाजसुधारक	322 - 32
78	प्रा. डॉ. नरेंद्र धोंडीराम शिंदे	स्वामी दयानंद सरस्वती यांची ग्रंथसंपदा व समीक्षा	325 - 33
79	प्रा. डॉ. बल्लोरे एस.के.	दयानंद सरस्वती यांचे अंधश्रद्धा आणि सामाजिक सुधारणावादी चळवळ	331 - 33
80	प्रा. डॉ. वीरश्री व्ही. आर्य	संस्कारों के पुरोधा स्वामी दयानंद सरस्वती	335 - 33
81	प्रा. डॉ.दिगंबर मुडेगांवकर	नवीन शैक्षणिक धोरणात महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या विचारांची उपयुक्तता	338 - 34
82	प्रा. बारकू मास्कर शिंगाडे	हिन्दी भाषा साहित्य और स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार	342 - 34
83	प्रा. ज्योती बाबूराव चिलवंत	हिंदी भाषा साहित्य : स्वामी दयानंद सरस्वती के विचार	350 - 35
34	प्रा. डॉ. शामल भिवराव जाधव	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे धार्मीक विचार व कार्य	354 - 35
85	प्रा. डॉ. एल. यू. मेश्राम	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे राजकीय विचार	357 - 35
86	डॉ. एन. बी. आघाव डॉ. गणेश बालासाहेब बनसोडे	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे राजकीय व सामाजिक विचार	359 - 3
87	प्रा. डॉ. पी. एस. लोखंडे	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे सामाजिक विचार	365 - 3
88	डॉ. सुहास मोराळे	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे समग्र विचार	368 - 3
89	प्रियंका जालिंदर चव्हाण डॉ. चंद्रशेखर काशिनाथ तळेकर	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे सामाजिक व राजकीय कार्य	372 - 3
90	प्रो. डॉ. नवनाथराव आघाव	स्वामी दयानंद सरस्वती: सुधारणावादी	376 - 3
91	शेख अनिसा महेबुब	स्वामी दयानंद सरस्वती यांचे शैक्षणिक कार्य	384 - 3
92	सुश्री. स्वाति हिराजी देडे डॉ. विनोद्कुमार विलासराव वायचळ	स्वामी दयानन्द सरस्वती और समाज सुधार	389 - 3

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.6 No.7 January - February - 2025

स्वामी दयानन्द सरस्वती और समाज सुधार

सुश्री. स्वाति हिराजी देडे[1], डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ[2]
[1]शोध छात्रा, धारासुर मर्दिनी देवी मंदिर, दर्गाह रोड, धाराशिव (413501)
[2]शोध निर्देशक,
सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, व्यंकटेश महाजन महाविद्यालय,धाराशिव, (413501)
Corresponding Author - सुश्री. स्वाति हिराजी देडे
DOI - 10.5281/zenodo.14793014

आज जो देश ने करवट बदली है देश में जागृति के जो चिन्ह दिखाई दे रहे हैं देश की समाज - सुधार, शिक्षा का प्रसार वैदिक प्रचार ब्रम्हचर्य, शिक्षा आदि पुनीत आंदोलन दृष्टीगोचर हो रहे हैं । ये सब जगदगुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की ही महती कृपा का फल हैं । परम पुज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आपने महान कार्यो तथा त्याग और तपस्या के कारण ही सदासदा के लिए अमर बन गये हैं। संसार में उनकी समानता करने वाला कोई नहीं हैं।

जिस युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हुए उसमें कई वर्ष पूर्व से आज तक ऐसा एक ही महापुरुष पैदा हुआ हैं जो विदेशी भाषा नहीं जानते थे, जिसने स्वदेश से बाहर एक पग भी नहीं रखा था, जो पूर्ण स्वदेशी था अर्थात विचारों में, आचारों में, भाषा वेषभूषादि में स्वदेशी था, परम विद्वान होने के कारण सबका भक्ति - भाजन बना जिसका देश - विदेशी सभी मान सरते थे, उँचे से उँचे विदेशी पदाधिकारी और स्वदेशी राजे- महाराजे जिसका अति सम्मान किया करते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज पहले ही व्यक्ति थे जो अपने देश में पूर्ण स्वदेशी होते हुए भी पश्चिमी देशों के बडे-बडे नेताओं तथा जन-जन के गुरु कहलाये।

आपको अनेक पश्चिमी विद्वानों ने अपना महान गुरु, आचार्य और धर्म पिता माना हैं।

समाज सुधाकर स्वामी दयानन्द सरस्वती:

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समाज सुधार में अहम योगदान दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक परंपराओं को पुनर्जीवित करने और हिन्दु को शुध्द करने का काम किया। उन्होंने समाज में फैली कुरितियों और अंधविश्वासों का विचारों का विरोध किया।स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की, आर्य समाज ने जती-आधारित भेदभाव को कम करने, महिलओं के आधिकरों को राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का काम किया। वैदिक शिक्षा को बढावा दिया कईंग स्कूल और गुरुकुल स्थापत किए। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक पुनर्गठन ने सभी वर्णों और महिलाओं को भागीदारी को बढावा दिया अंधविश्वासों और खोखली कर्मकांडों के खिलाफ आवाज उठाई उन्होंने सती प्रथा रोकने, विधवाओं पर होने वाले अत्याचारों कों रोकने, छुआछूत जैसी कुरीतियों को खत्म करने पर जोर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ब्रम्हचर्य के पालन पर जोर दिया उन्होंने मुर्ति पूजा के खिलाफ आवाज उठाई हिंदी को पूरे देश में प्रचलित करने पर जोर दिया।

स्वामी दयानन्द को संन्यासी होने के कारण सम्पूर्ण देश की दशा की जानकारी थी। वे जाते उन्हें यह समझने में देर न लगती थी कि स्त्रियों पर इस देश में क्या बीत रही हैं, सबसे पहला कारण स्त्रियों की

स्थिति ठीक न होने क अशिक्षा उन्होंने देखा। स्त्री अशिक्षा के कारण समानता के अधिकारों से वंचित थी। इसके अतिरिक्त वह बाल-विवाह, आदि में फैलते व्यभिचार, शोषण, अत्याचार जैसी कुप्रथाओं और समाज के षडयंत्र की शिकार बनकर दुःख से पीडित थी।

सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा एवं समानता के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रयास लोक विख्यात हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के हृदय में दो पीडा थीं। गुलाम भारत को स्वाधीन देखना तथा समाज वेदानुकूल हो। उसमें अत्यधिक दुर्दशा महिलाओं की होने पर समाज कैसे स्वस्थ हो सकता हैं? महिलाओं का सर्वांगीण विकास चाहने वाले वे वेदों के बाद प्रथम पुरुष थे। इतिहास को दोहराने पर स्पष्ट पता चलता हैं कि पशुओं के बाद यदि मनुष्य में किसी पर जुल्म हुआ हैं तो वह नारी जाती ही हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती मात्र ऐसे पुरुष हुए जिन्होंने विश्व के इतिहास को हमारे समक्ष रखते हुए यह सिध्द किया कि यह भारत विश्वगुरु इसिलिए था वेदों के अनुसार स्त्री को पढने तथा अन्य कार्यों में पुरुष के समान ही अधिकार था।

आर्य समाज कार्य तथा सुधारवादी दृष्टिकोण

आर्य समाज :

आर्य समाज संस्कृत में हैं कुलीनों का समाज। आर्य समाज की स्थापना सबसे पहले 1857 में 10 अप्रैल को स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा बॉम्बे में की गई थी, इस समाज ने भारतीयों के धार्मिक दृष्टीकोण में गहरा बदलाव लाया।

आर्य समाज सिध्दांत:

ईश्वर समस्त उचित ज्ञान का प्राथमिक स्त्रोत हैं।

- वह सर्वज्ञ हैं, वह हि पूजनीय हैं।
- वेद उचित ज्ञान के शास्त्र हैं। आर्यों को इन्हें पढना, सुनना और दूसरों को पढाना चाहिए।
- वह उचित ज्ञान का प्राथमिक स्त्रोत हैं।
- हमें सत्य को ग्रहन करना और असत्य का त्याग करना पढाना चाहिए।
- सभी कार्य धर्म का पालन करते हुए करने चाहिए।
- आर्य समाज का उद्देश्य सभी के लिए शारीरिक और सामाजिक कल्याण को बढावा देना है।
- सभी को प्रेम, धार्मिकता और न्याय का पालन करना चाहिए।
- हमें अपने, कल्यान की चिंता नहीं करनी चाहिए।

स्वामी दयानंद सरस्वती सन 1867 के हरिव्दार के कुम्भ मेले में धर्म प्रचार करने के उद्देश्य से आये थे। महर्षि दयानन्द तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरितियों तथा अंधविश्वासों और रुढियों, बुराइयों और पाखण्डों का खण्डन और विरोध किया।

महर्षि दयानन्द एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम हैं जिसका व्याख्या करना असम्भव से परे हैं वे समाज सुधारक एवं धर्माचार्य ही नहीं अपितु एक धुरन्धर योगी तपस्वी, भाष्यकर, वेदाचार्य, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनैतिक, कुशल प्रशासनिक, धीर, गंभीर, बलवान, ब्रम्हचारी, सदाचारी एंव दृढ राष्ट्रवादी विचार धारा युक्त महामानव थे। सृष्टि एवं व्यष्टि में ऐसा कोई विषय नहीं हैं जो उनसे स्पर्श हुए बिना रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ सुचि :

1. राष्ट्रपितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती : पं हरिदेव आर्य
2. विकिपिडिया
3. इंटरनेट
4. दयान्दद सरस्वती का स्त्री-विमर्श तथा उसका आधुनिक हिंदी साहित्य पर प्रभाव

Bharatiya Shikshan Prasarak Sanstha`s

Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai

National Conference on "Relevance of Swami Dayanand Saraswati & Indian Nationalism"

Organized by
Department of Political Science

Sponsored By
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Chhatrapati Sambhajinagar